14

कलीसिया जहां की सदस्या इज़ेबेल थी

(2:18-29)

अपने अध्ययन में हमने एशिया माइनर के तीन अति प्रसिद्ध नगरों, इफिसुस, स्मुरने और पिरगमुन की सैर की है। अब हम दक्षिण पूर्व में स्वदेश की ओर मुड़कर थुआतीरा में जाएंगे।[1] थुआतीरा कुछ स पत्ति वाला नगर था, परन्तु आर भिक कलीसिया के समय अधिकतर लोग इसे पिरगमुन से सरदीस को जाने वाले मार्ग पर एक मामूली विश्राम स्थल के रूप में मानते थे। यह असिया की सात कलीसियाओं वाले नगरों से ''कम प्रसिद्ध, कम महत्वपूर्ण और कम दर्शनीय था।''[2]

अपनी पत्नी के साथ तुर्की में जाने के समय भी हमारा गाइड थुआतीरा को महत्वहीन मानता था। पिरगमुन और थुआतीरा को अगले दिन जाने के लिए समझाते हुए हमारे दल को बताया गया था कि ''थुआतीरा जाने की कोई आवश्यकता नहीं है, वहां देखने योग्य कुछ खास नहीं है, वहां जाने से वापस आते समय हमें बहुत रात हो जाएगी।'' मैं बोल पड़ा, ''दूसरों का तो पता नहीं, परन्तु मैं तो सात कलीसियाओं वाले *सभी* स्थान देखने आया हूं!''

दूसरों को भी ऐसा ही लगा सो अगले दिन पिरगमुन देखने के बाद इज़मीर जाने से पहले दुखी सा गाइड हमें थुआतीरा के ल बे दौरे पर ले गया। हमारे वहां पहुंचने तक अंधेरा हो चुका था और रात पड़ गई थी और गाइड का कहना सही था कि वहां देखने योग्य कोई विशेष स्थान नहीं था केवल कुछ पुराने पत्थर, अतीत की कुछ धुंधली सी यादें थीं।[3] उसने यह भी सही कहा था कि इज़मीर पहुंचने तक हमें बहुत रात हो जाएगी; अगले दिन हम सभी थक चुके थे। तौ भी मुझे इस बात की प्रसन्नता थी कि हम वहां गए हैं। ऊंचे-ऊंचे खण्डहरों के बीच खड़े हारवे पोर्टर को बाइबल में से पढ़ते हुए सुनकर मेरा मन घबरा रहा था:

> और थुआतीरा की कलीसिया के दूत को यह लिख,
> परमेश्वर का पुत्र जिसकी आंखें आग की ज्वाला की नाईं, और जिसके पांव उत्तम पीतल के समान हैं, यह कहता है, कि मैं तेरे कामों, और प्रेम, और विश्वास,

और सेवा, और धीरज को जानता हूं, ... (2:18, 19)।

भाई पोर्टर को और किसी भी पत्र से इस पत्र को पढ़ने में अधिक समय लगा। इफिसुस की कलीसिया के नाम पत्र केवल सात आयतों में है; स्मुरने के नाम चार में; पिरगमुन के नाम, छह में; परन्तु थुआतीरा के नाम पत्र बारह आयतों में है। यह पत्र सबसे ल बा और सबसे अधिक निर्देशात्मक है। थुआतीरा हो सकता है कि पहली शताब्दी के लेखकों और बीसवीं शताब्दी के हमारे गाइड के लिए महत्वहीन हो, परन्तु यीशु के लिए यह महत्वपूर्ण था! यीशु की दिलचस्पी केवल न्यूयॉर्क नगर, लंदन, टोकियो और सिडनी में ही नहीं है। उसकी दिलचस्पी जुडसोनिया, ऑरकैंसा; दिमेरारा, गुयाना; पोर्ट हरकोट, नाइजीरिया; और हैदराबाद, भारत में भी है।

हो सकता है कि आर भिक लेखकों ने थुआतीरा के बारे में अधिक न कहा हो, परन्तु जो कुछ उन्होंने कहा, वह आंखें खोल देने वाला है। थुआतीरा बड़ा नगर न होने के बावजूद वाणिज्य और व्यापार का केन्द्र था। प्रेरितों के काम पुस्तक में हम ''लुदिया नामक थुआतीरा नगर की बैंजनी वस्त्र बेचने वाली एक भक्त स्त्री'' (16:14क) के बारे में पढ़ते हैं। यह नगर ऊन उद्योग तथा महंगे बैंजनी रंग के लिए प्रसिद्ध था, जो शंख मीन की एक लुप्त किस्म से बूंद-बूंद करके निकाला जाता था।

थुआतीरा विशेषकर अपने व्यापारिक संघों के लिए प्रसिद्ध था। वहां के संघ ''स भवतया प्राचीन जगत के किसी भी अन्य नगर से अधिक विस्तृत और संगठित थे।''[4] संघ चर्मकारों, जुलाहों, ठठेरों, कु हारों, ललारियों, दर्जियों, बेकरों और अन्य काम करने वाले श्रमिकों के होते थे। ये संघ इतने शक्तिशाली थे कि संघ का सदस्य बने बिना किसी को रोज़गार नहीं मिलता था।[5] उदाहरण के लिए, बेकरों के संघ का सदस्य बने बिना, बेकर का काम नहीं किया जा सकता था।

मसीही लोगों की समस्या यह थी कि ''हर संघ का अपना संरक्षक देवता, पर्व और त्यौहार थे, जिसमें कामुक मनोरंजन भी शामिल थे।''[6] संघ की सभाएं आम तौर पर मूर्तियों को बलिदान किए जाने वाले भोजन खाने के साथ होती थीं और कई बार तो अनैतिकता भी होती थी।[7] दूसरी शताब्दी तक कई मसीही अगुवे सिखाते थे कि मसीही लोगों को संघों का सदस्य नहीं बनना चाहिए, परन्तु प्रकाशितवाक्य के लिखे जाने के बाद भी मसीही लोग इस दुविधा से निकले नहीं थे। उनकी अवस्था को समझने के लिए कल्पना करें कि यदि मुस्लिम, बौद्ध या किसी अन्य धर्म का सदस्य बने बिना आपको काम नहीं मिलता तो आप क्या करेंगे।[8] ऐसा होने पर क्या आप अपने परिवार के पालन-पोषण के लिए अपने विश्वास को बेच देंगे या उन्हें भूखा रहने देंगे?

इस सब से ल बे पत्र का अध्ययन करते हुए इस प्रश्न को ध्यान में रखें।

अभिवादन (2:18क)

पत्र का आर भ इस अभिवादन से होता है: ''और थुआतीरा की कलीसिया के दूत को

यह लिख, ...'' (आयत 18क)। हमें नहीं मालूम कि थुआतीरा में कलीसिया कब बनी थी। लुदिया और उसके घराने के लोगों ने घर पहुंच अपने विश्वास को दूसरों के साथ बांटा होगा या हो सकता है कि इसका आर भ पौलुस के इफिसुस में रहते समय हुआ हो (प्रेरितों 19:10)।

यीशु का विवरण (2:18ख)

फिर यीशु ने एक महत्वपूर्ण जोड़ के साथ स्वयं लेखक के रूप में पहले अध्याय से कुछ शब्दों का इस्तेमाल किया: ''परमेश्वर का पुत्र[9] जिसकी आंखें आग की ज्वाला की नाईं, और जिसके पांव उत्तम पीतल के समान हैं, ...'' (आयत 18ख)। (दीवटों के बीच चलते हुए यीशु का दर्शन का चित्र देख) इसमें ''परमेश्वर का पुत्र'' अतिरिक्त वाक्यांश है। यदि हमें कोई संदेह था कि अध्याय 1 वाला ''मनुष्य के पुत्र सदृश'' यीशु ही था, तो अब वह संदेह खत्म हो जाता है।

यीशु ने अपने बारे में मण्डली को तीन ज़बर्दस्त सच्चाइयां याद दिलाईं: (1) वह अनश्वर है; वह ''परमेश्वर का पुत्र'' है। (2) वह सर्वज्ञ है; उसकी ''आंखें आग की ज्वाला की नाईं'' हैं। अगली आयत ''मैं ... जानता हूं'' शब्दों से आर भ होती है। आयत 23 में यीशु ने ज़ोर दिया कि ''हृदय और मन का परखने वाला मैं ही हूं।'' (3) वह धर्मी है; ''उसके पांव उत्तम पीतल के समान हैं।'' पहले अध्याय में ''उसके पांव उत्तम पीतल के समान थे जो मानो भट्ठी में तपाए गए हों'' था (1:15क)। यह दुष्टों को यीशु द्वारा दिए जाने वाले निश्चित दण्ड की बात है। पत्र में आगे यीशु ने कहा कि वह अधर्मियों को ''बड़े क्लेश में'' डालेगा (2:22)। फिर उसने चेतावनी दी कि वह पश्चात्ताप न करने वालों को ''मार डालेगा'' (2:23)।

सराहना (2:19)

यह बताने से पहले कि उसे भयभीत करने वाले स्वभाव की क्यों आवश्यकता थी, उसने उस मण्डली में देखे सकारात्मक गुण बताए: ''मैं तेरे कामों, और प्रेम,[10] और विश्वास, और सेवा, और धीरज[11] को जानता हूं, और यह भी कि तेरे पिछले काम पहिलों से बढ़कर हैं'' (आयत 19)। यीशु ने थुआतीरा में किसी अन्य कलीसिया से सराहने योग्य अधिक बातें पाईं।

कलीसिया प्रभावशाली थी

यह काम करने वाली कलीसिया थी। यीशु ने कहा, ''मैं तेरे कामों को जानता हूं।'' यह उस मण्डली जैसी नहीं थी, जिसने विश्वासी लोगों की किसी पत्रिका में छपने के लिए भेजा था: ''गत वर्ष कोई बपतिस्मा नहीं हुआ, किसी को संगति में वापस नहीं लाया गया और कोई नया सदस्य नहीं बना। प्रार्थना करें कि हम अन्त तक विश्वास में बने रहें।''[12] थुआतीरा की कलीसिया गतिशील, जीवित और सक्रिय थी।

यह कलीसिया प्रेम करने वाली थी। यीशु ने कहा, ''मैं तेरे प्रेम को जानता हूं।'' हमें ''भाईचारे के प्रेम से एक-दूसरे पर दया'' रखनी चाहिए (रोमियों 12:10क)। शायद इस बात का कुछ महत्व है कि जिन सात मण्डलियों को स बोधित किया गया था, उनमें से अपने प्रेम के लिए सराहनीय केवल यही मण्डली थी।

यह कलीसिया सहायता करने वाली थी, ''मैं तेरी सेवा को जानता हूं।'' इस मण्डली का प्रेम व्यावहारिक था; इसके सदस्य दूसरों की सहायता की तलाश में रहते थे।

यह कलीसिया भरोसा करने के योग्य थी। यीशु ने कहा, ''मैं तेरे विश्वास को जानता हूं।'' अपनी ही सामर्थ पर निर्भर रहने के बजाय उन्होंने प्रभु पर निर्भर रहना सीख लिया था।

यह कलीसिया स्थिर थी। यीशु ने कहा, ''मैं तेरे धीरज को जानता हूं।'' आस-पास अधर्मी समाज का होना निराशाजनक रहा होगा, परन्तु मसीही लोगों ने आशा नहीं छोड़ी थी।

कलीसिया में सुधार हो रहा था

यीशु की सबसे शानदार टिप्पणी यह है कि यह कलीसिया भले कार्यों में बढ़ रही थी: उसने कहा, ''मैं ... जानता हूं कि ... कि तेरे पिछले काम पहिलों से बढ़कर हैं''! आम तौर पर समय बीतने पर लोगों का जोश ठण्डा हो जाता है और वे पहले की अपेक्षा कम रुचि लेते हैं, परन्तु थुआतीरा की कलीसिया प्रतिदिन प्रभु के लिए और काम कर रही थी। इस अर्थ में यह मण्डली दूसरी कई मण्डलियों के विपरीत थी, विशेषकर सरदीस की मण्डली के (3:1)। जैसा कि जे स एम. टौली ने कहा है, ''कलीसिया की एकमात्र सुरक्षा आगे बढ़ने में है।''[13]

निंदा (2:20-23)

सभी मण्डलियों की तरह थुआतीरा की कलीसिया में केवल अच्छी बातें ही नहीं थीं बल्कि इसमें कमज़ोरियां भी थीं। यीशु ने इसके गुणों के लिए इसकी सराहना की थी; अब उसने इसकी बुराइयों के लिए इसकी निंदा की: ''पर मुझे तेरे विरुद्ध यह कहना है, कि तू उस स्त्री इजेबेल को रहने देता है,[14] जो अपने आप को भविष्यवक्तिन कहती है, और मूर्तों के आगे के बलिदान खाने को सिखलाकर भरमाती है'' (आयत 20)।

दोषी ठहराई गई ''भविष्यवक्तिन''

स्पष्टतया थुआतीरा की कलीसिया में झूठी शिक्षा देने वाली एक स्त्री थी।[15] ऐसा लगता नहीं है कि उसका नाम इजेबेल हो अर्थात उसके माता-पिता ने उसका यह नाम उसी कारण नहीं रखा होगा, जिस कारण आज हम अपनी बेटियों के नाम नहीं रखते। यीशु ने उसे इजेबेल इसलिए कहा होगा क्योंकि वह पुराने नियम वाली बदनाम इजेबेल के पद चिह्नों पर चल रही थी।

इजेबेल एक मूर्तिपूजक राजकुमारी थी, जिसने इस्राएल के राजा आहाब से विवाह करके उसे मूर्ति पूजा में लगा दिया था।[16] उसने उससे सामरिया में बाल देवता का मन्दिर बनवाया और अपनी मेज़ पर अशेरा के चार सौ भविष्यवक्ताओं[17] को खिलाया था। इजेबेल के बारे में सोचकर मेरे ध्यान में एक ऐसी स्त्री आती है, जो मक्कार, चरित्रहीन, और बिना किसी नैतिक समझ के होने के साथ सुन्दर, आकर्षक और कामुक थी।

थुआतीरा वाली इजेबेल में ऐसी ही बातें होंगी। स्पष्टतया वह एक महत्वाकांक्षी और प्रभावी स्त्री थी, जो नबिया होने का दावा करती थी। कलीसिया के आरंभिक दिनों में, आश्चर्यकर्म के दानों में से एक भविष्यवाणी का दान भी था (1 कुरिन्थियों 12:10)।[18] यह दान पुरुषों के अलावा स्त्रियों को भी दिया जाता था (प्रेरितों 2:17; 1 कुरिन्थियों 11:5)। स्त्रियां इस दान का इस्तेमाल कलीसिया की आम सभा में नहीं कर सकती थीं (1 कुरिन्थियों 14:34),[19] परन्तु विशेष परिस्थितियों में वे इसका इस्तेमाल कर सकती थीं (1 कुरिन्थियों 11:5)। परन्तु यीशु ने यह नहीं कहा कि इस स्त्री को वास्तव में भविष्यवाणी का दान मिला था, बल्कि यह कहा कि वह अपने आप को *भविष्यवक्तिन* कहती थी। आज हम उसे ''*कथित* भविष्यवक्तिन'' कहेंगे।

नॉस्टिकों की तरह[20] यह नकली भविष्यवक्तिन ''गहरी बातों'' तक पहुंच होने का दावा करती थी अर्थात उसका कहना था कि वे बातें केवल उसे ही मालूम हैं। यीशु ने उसकी शिक्षाओं को ''*शैतान की* गहरी बातें'' कहा (2:24)।[21] स्पष्टतया वह संसार के साथ मसीही सम्बन्ध के बारे में कुछ रहस्यवादी प्रकाशन होने का दावा करती थी। उसके संदेश के सार की कल्पना करना कठिन नहीं है: ''परमेश्वर ने मुझे बताया है कि तु हें संघों में शामिल होना चाहिए ताकि तुम अपने परिवार का पालन-पोषण कर सको। वास्तव में उसने मुझसे कहा है कि वह तु हारे कारोबार को बढ़ते देखना चाहता है ताकि तुम उसकी विश्वासी भविष्यवक्तिन को और चंदा दे सको!''

उसने यह बात घर-घर में फैला दी होगी। शायद वह धनी और प्रभाव वाली स्त्री थी जो अपने महलनुमा घर में होने वाले अनुयायियों को बुलाती थी। शायद वह नये चेलों की तलाश में घर-घर जाती थी। जो भी तरीका वह अपनाती हो, उसकी फैलाई शिक्षा से मसीही लोग ''व्यभिचार करने[22] और मूर्तियों के आगे चढ़ाई गई वस्तुएं खाने'' लगे थे (आयत 20ख)। बिलामियों और नीकुलइयों की शिक्षा का एक ही परिणाम होने के कारण (2:14, 15) यह अलग नाम वाली वही शैतानी पैदावार होगी।

इजेबेल सफल थी, क्योंकि वह वही कहती थी जो बहुतों को सुनना अच्छा लगता था। यह पक्का है ''... कि लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे पर कानों की खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिए बहुतेरे उपदेशक बटोर लेंगे और अपने कान सत्य से फेरकर कथा-कहानियों पर लगाएंगे'' (2 तीमुथियुस 4:3, 4)।

समझौता करने वाले लोग

यीशु इजेबेल और उसके अनुयायियों से अप्रसन्न ही नहीं था। विशेष रूप से वह

कलीसिया से विद्रोही को दुष्कर्म करने देने की अनुमति के कारण अप्रसन्न था: ''पर मुझे तेरे विरुद्ध यह कहना है, कि तू उस स्त्री इजेबेल को रहने देता है, जो अपने आप को भविष्यवक्तिन कहती है'' (आयत 20क)। पौलुस ने आज्ञा दी थी कि ''अन्धकार के निष्फल कामों में सहभागी न हो, वरन उन पर उलाहना दो'' (इफिसियों 5:11)। उसने मसीही लोगों से कहा था कि ''... यदि कोई भाई कहलाकर ... अंधेर करने वाला हो तो उसकी संगति मत करना'' (1 कुरिन्थियों 5:11)।

थुआतीरा की कलीसिया ने इजेबेल और उसके अनुयायियों से संगति क्यों नहीं तोड़ी थी? यह सुझाव दिया गया है कि इजेबेल कलीसिया के किसी अगुवे की पत्नी थी।[22] कुछ प्राचीन हस्तलेखों में आयत 20 में ''तु हारी स्त्री'' है, जो ''तु हारी पत्नी'' कहने का यूनानी शास्त्र में असामान्य ढंग है।[23] इजेबेल किसी प्रचारक या ऐल्डर की पत्नी हो सकती है। कम से कम वह एक प्रभावशाली स्त्री तो अवश्य थी, जो उसका सामना करने वालों के लिए परेशानी पैदा कर सकती थी।

यह भी सुझाव दिया जाता है कि कुरिन्थुस की तरह यह मण्डली भी न्याय न करने की अपनी सोच पर गर्व करती थी (देखें 1 कुरिन्थियों 5:1, 2)। जैसा कि पहले कहा गया है, केवल इसी मण्डली की अपने प्रेम के लिए सराहना की गई। शायद कुछ सदस्यों में प्रेम ''मधुर भावुकता'' में बदल गया था ''जो गड़बड़ के भय से पाप को सह रहा था।''[24] बुराई को सहने का जो भी कारण हो, वे कारण यीशु को स्वीकार्य नहीं थे। वह थुआतीरा के मसीही लोगों को बता देना चाहता था कि ''इजेबेल के साथ व्यवहार इस कलीसिया का सबसे आवश्यक काम था।''[25]

चेतावनी और धमकी (2:21-25)

अविश्वासी क्या उ मीद कर सकते थे

पत्र में अगली बात एक सदमे की तरह आती है: यीशु ने कहा, ''मैंने उसे मन फिराने के लिए अवसर दिया'' (आयत 21क)। यदि आपको परमेश्वर के धीरज का सबूत चाहिए, तो वह यह है। यीशु ने दुष्ट स्त्री को मन फिराने और अपने जीवन को बदलने का हर अवसर दिया! (देखें 2 पतरस 3:9)। अफसोस कि प्रभु जब लोगों को मन फिराने का समय देता है तो कुछ लोग इसे यह सबूत समझते हैं कि प्रभु उनके पाप पर ध्यान नहीं देता। यीशु ने कहा कि इजेबेल को मन फिराने का अवसर मिलने के बावजूद ''वह अपने व्यभिचार से मन फिराना नहीं चाहती'' (आयत 21ख)। RSV में है ''वह मन फिराने से इनकार करती है।''

कलीसिया ने उसके अक्खड़पन को सह लिया था परन्तु यीशु ने नहीं सहना था। उसने प्रतिज्ञा की, ''देख, मैं उसे खाट पर डालता हूं;[26] और जो उसके साथ व्यभिचार करते हैं[27] यदि वे भी उसके से कामों से मन न फिराएंगे तो उन्हें बड़े क्लेश में डालूंगा''[28] (आयत

22)। इस चेतावनी में यीशु ने शब्दों के खेल का इस्तेमाल किया: इजेबेल ने मसीही लोगों को हमबिस्तर होने के लिए भरमाया था; यीशु ने उसे और उसके अनुयायियों को क्लेश के बिस्तर में फैंक देना था। परन्तु ध्यान दें कि कब तक, ''जब तक वे मन नहीं फिराते।'' हमारा अनुग्रहकारी प्रभु इस प्रावधान को हमेशा जोड़ देता है।

यीशु ने आगे कहा, ''और मैं उसके बच्चों को मार डालूंगा'' (आयत 23क)। यहां ''बच्चों'' इजेबेल की आत्मिक संतान[29] अर्थात उन्हें कहा गया जो उसकी शिक्षा को मानते थे।[30] मूल शास्त्र में यीशु ने यूं कहा, ''मैं उसके बच्चों को *मृत्यु* से मारूंगा'' जो एक इब्रानी अलंकार है, जिसका अर्थ ''निश्चित और भयंकर मृत्यु से मारना'' है![31]

पश्चात्ताप न करने वालों को दण्ड देने का यीशु का एक उद्देश्य अपने लोगों को सबक सिखाना था: ''और तब सब कलीसियाएं जान लेंगी कि हृदय और मन का परखने वाला[32] मैं ही हूं'' (आयत 23ख)। हृदय के परखने वाले के रूप में उसे पता होना था कि किसने मन फिराया है और किसने नहीं। इस प्रकार हर किसी को वही मिलना था, जिसके वह योग्य होना था: ''और मैं तुम में से हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला दूंगा'' (आयत 23ग)।[33]

विश्वासियों को क्या करना चाहिए

आयत 24 में पत्र का सुर अचानक कठोर से कोमल हो जाता है।[34] पश्चात्ताप न करने वालों के लिए दण्ड रखा होने की बात कहने के बाद झट से यीशु ने जोड़ा:

> पर तुम थुआतीरा के बाकी लोगों से, जितने इस शिक्षा को नहीं मानते, और उन बातों को जिन्हें शैतान की गहिरी बातें कहते हैं, नहीं जानते, यह कहता हूं, कि मैं तुम पर और बोझ न डालूंगा। पर हां, जो तु हारे पास है उसको मेरे आने तक थामे रखो (आयत 24, 25)।

आयत 20 दिखाती है कि यीशु ने मण्डली के कुछ लोगों को इजेबेल और उसके समर्थकों से पीछे न हटने का ज़ि मेदार ठहराया था, परन्तु आयत 24 यह प्रभाव देती है कि उसने औरों को ज़ि मेदार नहीं ठहराया। पहले समूह वाले प्रमुख लोग कलीसिया के अगुवे होने थे, जिन्होंने कलीसिया के अनुशासन को लागू करने में पहल नहीं की थी। इफिसुस की कलीसिया में ऐल्डर कई सालों से थे (प्रेरितों 20:17, 28)। थुआतीरा की कलीसिया में भी ऐल्डर होंगे (प्रेरितों 14:23)। ऐल्डरों की ज़ि मेदारी ''पूरे झुंड की चौकसी'' करना है (प्रेरितों 20:28क)। पौलुस ने ऐल्डरों के एक समूह को चेतावनी दी थी कि ''तु हारे ही बीच में से भी ऐसे-ऐसे मनुष्य [हम जोड़ सकते हैं, स्त्रियां] उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी-मेढ़ी बातें कहेंगे'' (प्रेरितें 20:30)। उसने उनसे आग्रह किया था, ''इसलिए जागते रहो'' (प्रेरितें 20:31)। थुआतीरा में जो भी अगुवे थे, वे अपनी ज़ि मेदारी

निभाने में असफल रहे थे।[35]

तो फिर दूसरा समूह कौन होना था, जिन्हें यीशु ने ज़ि मेदार ठहराया था? मेरा मानना है कि वे विश्वासी सदस्य थे, जो इजेबेल के साथियों द्वारा लाए गए खतरे को समझते थे परन्तु उन के पास कुछ करने की सामर्थ नहीं थी। इन लोगों से यीशु ने कहा, ''मैं तुम पर और बोझ न डालूंगा। पर हां, जो तु हारे पास है, उसको मेरे आने तक थामे रखो'' (आयतें 24ग, 25)। ''बोझ'' यहां ज़ि मेदारी को कहा गया हो सकता है।[36] संदर्भ में यीशु की बात का अर्थ यह लगता है कि ''मैं इस मामले को सुलझाने का बोझ तु हारे कंधों पर नहीं डालूंगा; तुम जो कुछ कर सकते थे, वह तुमने किया। तु हारी ज़ि मेदारी अब यह है कि उन आशिषों को थामे रहो जो मैंने तु हें दी हैं और विश्वास में बने रहो।''

कई साल पहले, मुझे कैंसस में रहने वाले एक मित्र का पत्र मिला। वह परेशान था क्योंकि उसे लगा था कि मुझे मण्डली में किसी भाई को उसकी जीवन शैली के लिए डांटना चाहिए, और शायद उससे अपने आप को दूर रखना चाहिए। उसने कई बार ऐल्डरों से बात की थी परन्तु कुछ हल नहीं निकला था। मेरा मित्र जानना चाहता था कि वह क्या करे। उसे लगता था कि उसे मण्डली को छोड़कर किसी और मण्डली में चले जाना चाहिए। परमेश्वर की ऐसी योजना हुई कि उससे पहले रविवार मैंने थुआतीरा की कलीसिया के नाम पत्र में से वचन सुनाया और इसकी बातें मुझे ताजा हो गईं।

मेरे मित्र ने अपने पत्र में यह लिखा था कि वह केवल ऐल्डरों के पास ही नहीं गया, बल्कि उसके भाई को भी यह दिखाने की कोशिश करने के लिए कि ''उसकी गलती क्या है'' और उसके ''प्राण को मृत्यु से बचाने'' (याकूब 5:20) के लिए उसके पास भी गया था। इस प्रकार अपने उत्तर में मैंने कहा कि स्पष्टतया उसने वह सब किया जो वह कर सकता था, उसने अपने आप को मामले से निकाल लिया (यहेजकेल 3:19)। मैंने इस बात पर बल दिया कि यदि ऐल्डरों ने अपनी ज़ि मेदारी नहीं निभाई तो इसके लिए उन्हें जवाब देना पड़ेगा न कि उसे (इब्रानियों 3:17)।

फिर मैंने अपने उस मित्र को थुआतीरा में ''विश्वासी रहने वाले कुछ'' को दिए यीशु के निर्देश बताए। उन्हें मण्डली छोड़कर जाने की सलाह देने के बजाय,[37] मसीह में उन्हें निर्देश दिया, ''पर तुम ... से, जितने इस शिक्षा को नहीं मानते, ... यह कहता हूं, कि मैं तुम पर और बोझ न डालूंगा। पर हां, जो तु हारे पास है उसे मेरे आने तक थामे रखो'' (आयतें 24, 25)। मैंने अपने मित्र को बताया, ''अभी तो, आप अपने पर वह बोझ डाल रहे हो जो दूसरों को लेना चाहिए और प्रभु नहीं चाहता कि आप वह बोझ उठाओ। इसे उतार दो, और *अपनी* ज़ि मेदारियों पर ध्यान लगाओ। उसके आने तक उन्हें थामे रखो!''

प्रतिज्ञा (2:26-28)

जो सलाह मैंने अपने दोस्त को दी वह आसान नहीं थी और मुझे यकीन है कि थुआतीरा के मसीही लोगों को दी गई यीशु की चुनौती भी आसान नहीं थी। दुष्ट संसार, अविश्वासी सदस्यों और गैर-ज़ि मेदार अगुओं के बीच में रहने वालों के लिए यह निराशाजनक

थी। इस कारण यीशु ने किसी भी उस व्यक्ति के लिए जो अपने आप को ऐसी परिस्थिति में पाता है, प्रोत्साहित करने के लिए विशेष प्रतिज्ञाएं दीं:

> जो जय पाए, और मेरे कामों[38] के अनुसार अन्त तक करता रहे, मैं उसे जाति-जाति के लोगों पर अधिकार दूंगा। और वह लोहे का राजदण्ड लिए हुए उन पर राज्य करेगा, जिस प्रकार कु हार के मिट्टी के बर्तन चकना चूर हो जाते हैं: जैसे कि मैंने भी ऐसा ही अधिकार अपने पिता से पाया है (आयतें 26-28)।

यीशु ने पहले उन्हें शक्ति देने की प्रतिज्ञा की। लोहे के राजदण्ड की बात भजन संहिता 2 से ली गई है, जो यीशु के अधिकार की बात करने वाला मसीह से जुड़ा भजन है।[39] यीशु यह प्रतिज्ञा कर रहा था कि जो उसके कामों के अनुसार करता है (अर्थात उसकी आज्ञा मानता है) वह उसके राजदण्ड[40] में भागी होगा और अन्त में बुराई पर उसकी विजय होगी। यह एक महत्वहीन नगर में इस गुमनाम कलीसिया के लिए चौंकाने वाली बात थी।

फिर यीशु ने उ मीद दी। ''भोर का तारा'' एक चमकीला ''तारा''[41] है, जो दिन निकलने से पहले आकाश में दिखाई देता है। प्रकाशितवाक्य के अन्तिम अध्याय में यीशु ने *अपने आप को* ''भोर का चमकता हुआ तारा'' (22:16) कहा, जिसका अर्थ यह है कि वह विश्वासी लोगों के साथ एक विशेष स बन्ध की बात कर रहा होगा। यीशु थुआतीरा के लोगों को आगे को देखने के लिए कुछ देना चाहता था। जैसे भोर का तारा नये दिन का हरकारा होता है, वैसे ही निराशा की अंधेरी रात खत्म होकर उनके जीवनों के आकाश पर आशा का एक नया दिन चढ़ने वाला था।

ताड़ना (2:29)

फिर यीशु ने यह ताड़ना शामिल की ''जिस के कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है'' (आयत 29)। ध्यान दें कि पहली बार यह ताड़ना पत्र के अन्त में आती है। यह बाकी तीन पत्रों के लिए नमूना होगी।

सारांश

इस प्राचीन पत्र की कई सच्चाइयां ''प्रासंगिकता के उत्सुक हाथों से सदियों में से होती हुई हम तक पहुंची हैं।''[42] आइए उन में से चार पर ध्यान लगाते हैं।

(1) *आज भी संसार के साथ हमारा युद्ध है: हम समझौता नहीं कर सकते।* मसीही लोगों की हर नई पीढ़ी के लिए थुआतीरा की कलीसिया वाली चुनौती का सामना करना आवश्यक है: ''संसार में'' होना (यूहन्ना 17:11) परन्तु ''संसार के'' नहीं (यूहन्ना 17:16)।

(2) *आज भी हमारे बीच में प्रभावशाली लोग हैं, जो बुराई को आकर्षक बना सकते हैं: हमें चाहिए कि गुमराह न हों।* इजेबेल की संतान आज भी जीवित है और भली-चंगी है। याद रखें कि ''आवश्यक नहीं कि आकर्षक, मनोहर, प्रतिभाशाली लोग बौद्धिक या

नैतिक रूप से गलती न कर सकते हों।''[43] सब को वचन की स्पष्ट शिक्षा के द्वारा परखा जाना आवश्यक है (1 यूहन्ना 4:1)।

(3) *अपनी चुनौतियों का सामना करने के लिए आज भी हमें प्रभु की सहायता मिलती है; हमें निराश नहीं होना चाहिए।* सातों पत्रों में हर प्रतिज्ञा ''जय पाने वालों'' के लिए ही है। इस पत्र में यीशु ने एक व्या यात्मक वाक्यांश जोड़ा: ''जो ... मेरे कामों के अनुसार अन्त तक करता रहे, मैं उसे जाति-जाति के लोगों पर अधिकार दूंगा'' (आयत 26ख)। यदि आप ''जय पाने वाले'' होना चाहते हैं तो अपना जीवन यीशु को सौंप दें और उसकी इच्छा पूरी करने का निश्चय कर लें, परिस्थितियां चाहे जो भी हों।[44] यदि आप अपने आप को उसे दे देते हैं, तो यीशु जीवन की किसी भी समस्या पर काबू पाने के लिए आपकी सहायता करेगा।

(4) *आज भी हम गलत हो सकते हैं, परन्तु हमें हठी नहीं होना चाहिए।* क्या आप संसार के साथ समझौता करके गलत शिक्षा देने या मानने के दोषी हैं? यह पाठ मन फिराने के लिए आप को प्रोत्साहित करने की प्रभु की योजना का भाग हो सकता है। इसे अपने दिल पर लगा लें, और अनुग्रहकारी प्रभु द्वारा आपको दिए गए अवसर को तुच्छ न जानें। आज ही अपना जीवन बदल लें ताकि अन्त में प्रभु आपको श्राप नहीं, बल्कि आशीष दे!

सिखाने वालों और प्रचारकों के लिए नोट्स

थुआतीरा की कलीसिया के नाम पत्र पर कई प्रवचनों के शीर्षक हैं जिनमें ''इजेबेल'': ''इजेबेल का घर'' या ''इजेबेल जंक्शन'' जैसे नामों का इस्तेमाल किया जाता है। इसके बजाय अन्तिम प्रतिज्ञा पर ध्यान दिलाते हुए, रेअ समर्स ने इस भाग को ''तारे की प्रतीक्षा करो'' नाम दिया है। मसीही व्यक्ति ''अंधकार में और कई जटिलताओं में चल सकता है, परन्तु भोर का तारा उसे राह दिखा ही देगा; उसे [झूठी अगुआई] के पीछे चलने से इनकार करके *तारे की प्रतीक्षा* करनी चाहिए।''[45] अन्य स भावित शीर्षक ''परीक्षा में पड़ी कलीसिया'' और ''समझौते का खतरा'' हो सकते हैं।

टिप्पणियां

[1]''आसिया की सात कलीसियाएं और पतमुस टापू'' का मानचित्र देखें। [2]रोबर्ट एच. माउंस, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन,* द न्यू इंटरनेशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामैंट सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977), 101. [3]ये टूटे पत्थर आज के अखिसर गांव के मध्य में ढेरों पड़े हैं। [4]जे स एम. तौलि, *द सैवन चर्चिस ऑफ़ एशिया* (पैसाडिना, टैक्सस: हाउन पब्लिशिंग कं., 1968), 50. [5]कुछ हद तक यह संघ बहुत मज़बूत श्रम संगठनों जैसे हो सकते हैं। [6]एलन जॉनसन, ''रैवलेशन,'' *द एक्सपोजिटर'स बाइबल कमैंट्री,* अंक 12 (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1981), 443. [7]परमेश्वर द्वारा इन दोनों पापों की निंदा की जाती थी (और है)। पिछले पाठ में 2:14 पर नोट्स देखें। [8]प्रिंटिड प्रीचर स्कूल के कई छात्र ऐसे क्षेत्रों

में रहते हैं, जहां नए नियम की मसीहियत विरोधी धार्मिक या राजनैतिक विचारधारा अधिक पाई जाती है। यदि आप उन लोगों में से हैं, तो आपको मालूम है कि रोजगार पाने के लिए एक मसीही पर कितना विपरीत दबाव पड़ता है और अवश्य ही मेरी सहानुभूति और प्रार्थना आपके साथ है। [9]प्रकाशितवाक्य में केवल यहीं पर ''परमेश्वर का पुत्र'' शब्द आया है। [10]KJV में ''charity'' है परन्तु मूल शास्त्र में *अगापे* है, जो ''प्रेम'' के लिए नये नियम का विशेष शब्द है।

[11]''धीरज'' शब्द का अर्थ आमतौर पर ''धीरज से सहना'' है। [12]स भवतया रिपोर्ट भेजने वाले मण्डली के सदस्यों ने अपने जानने वाले सब लोगों को वचन सुनाया होगा फिर भी किसी ने नहीं माना, परन्तु यशायाह 55:11 और रोमियों 10:17 की शिक्षा के प्रकाश में ऐसा लगता नहीं है। [13]टौलि, 51. [14]कथित भविष्यवक्तिन से पिटने के बजाय कलीसिया के सदस्य उसे अपनी झूठी शिक्षा फैलाते रहने की *अनुमति दे रहे* थे। [15]कुछ लोगों का विचार है कि ''इजेबेल'' नाम केवल गलत शिक्षा का प्रतीक था या गलत शिक्षा देने वाली मण्डली के एक भाग के लिए इस्तेमाल किया जाता था, परन्तु यदि ऐसा है, तो यीशु ने पिरगमुन के स बन्ध में भी ऐसे ही वाक्यांश का इस्तेमाल करना था: ''तेरे बीच में *कुछ* ऐसे हैं, जो इजेबेल की शिक्षा को मानते हैं'' (देखें 2:14)। [16]इजेबेल की कहानी 1 और 2 राजा में मिलती है। विशेषकर 1 राजा 16; 18; 19; 21; 2 राजा 9 देखें। [17]अशेरा बाल की पूरक देवी थी। [18]आश्चर्यकर्म के ये दान केवल अस्थाई थे और नये नियम के पूरा होने के बाद बन्द हो गए। [19]मेरे एक मित्र ने जो किसी सा प्रदायिक कलीसिया के धार्मिक स्कूल में पढ़ता था, मुझे बताया कि एक प्रोफेसर थुआतीरा की कलीसिया में ''इजेबेल'' के उदाहरण को यह ''सिद्ध'' करने के लिए इस्तेमाल करता था कि आरं भिक कलीसिया में स्त्रियां प्रचारक होती थीं। यह एक अजीब निष्कर्ष है, क्योंकि ऐसा कोई संकेत नहीं है कि इजेबेल आम लोगों में सिखाती थी। इसके अलावा ऐसा कोई संकेत नहीं मिलता कि ''इजेबेल'' के किए *किसी काम* को प्रभु की स्वीकृति थी! [20]नॉस्टिकवाद या अध्यात्मज्ञान पर इस पुस्तक में पहले आई व्या या देखें।

[21]सातों पत्रों में, यीशु ने ''*शैतान* की सभा'' (2:9; 3:9), ''*शैतान* का सिंहासन'' (2:13) और ''जहां *शैतान* रहता है'' (2:13) जैसे वाक्यांशों के साथ बार-बार ज़ोर दिया कि संसार में होने वाली बुराई के पीछे कौन है। कुछ लोगों को लगता है कि ''शैतान की गहरी बातें'' इजेबेल द्वारा इस्तेमाल किया गया शब्द (''मैं और केवल मैं ही यह जानने में तु हारी सहायता कर सकती हूं कि तु हारा शत्रु कौन है'') हो सकता है, परन्तु यह शब्द यीशु का अवलोकन अधिक लगता है। [22]यह स्थिति इस मान्यता पर आधारित है कि आयत 18 वाला ''दूत'' कलीसिया का कोई अगुआ था और इसलिए ''तु हारी स्त्री/पत्नी'' उस अगुवे की पत्नी को कहा गया। [23]और बेहतर हस्तलेखों में यह नहीं मिलता। [24]टौलि, 52. [25]रूबल शैली, *द लैं ब एण्ड हिज एनिमीज: अंडरस्टैंडिंग द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (नैशविल्ले: टर्वटियथ सैंचुरी क्रिश्चियन फाउंडेशन, 1983), 38. [26]NASB में ''बीमारी के'' खाट जोड़कर इन्हें तिरछा किया गया है, जो यह संकेत देता है कि यह शब्दअनुवादकों द्वारा जोड़े गए थे। मूल शास्त्र में ''खाट'' ही है; परन्तु क्योंकि ''बड़ा क्लेश'' वाक्यांश के साथ यह मेल खाता है इसलिए ''क्लेश के खाट'' का अर्थ इसमें मिलता है। [27]आयत 20 में ''व्यभिचार करते'' शारीरिक पाप का संकेत ही है, परन्तु कुछ विद्वानों का मत है कि आयत 22 में ''उसके साथ व्यभिचार करते'' का अर्थ है ''मूर्ति पूजकों के पर्वों में भाग लेकर हम परमेश्वर से विश्वासघात करने में उनका साथ देते हैं''अन्य शब्दों में, *आत्मिक* व्यभिचार करते हैं। [28]''*अपने* कामों'' के बजाय ''*उसके* कामों से मन फिराने'' की आवश्यकता अजीब है। क्योंकि वे इजेबेल के साथ जा रहे थे, यीशु उन्हें जो कु छ *उसने* किया उसके लिए*उन्हें* ज़ि मेदार बना रहा था। [29]पौलुस ने कई बार अपने द्वारा मसीह में आने वालों को अपने बच्चे कहा (उदाहरण के लिए 1 कुरिन्थियों 4:14; 1 तीमुथियुस 1:18)। [30]यह हो सकता है कि ''उसके बच्चों'' (आयत 23) ''उसके साथ व्यभिचार करने वालों'' (आयत 22) की बात करने क ा एक और ढंग हो। यदि कोई अन्तर है तो यह एक डिग्री का होगा। कुछ लोगों का सुझाव है कि ''उसके बच्चों'' उन्हें कहा गया है, जो इजेबेल से प्रभावित ही नहीं हुए, बल्कि उसके संदेश को फैलाते भी थे।

[31]हमें पक्का नहीं मालूम कि इजेबेल के अनुयायियों को बीमारी और क्लेश के बिस्तर पर डालने से

यीशु का क्या अर्थ था। शायद यीशु ने उन्हें होशे में लाने की कोशिश के लिए *शारीरिक* रोग और मृत्यु का इस्तेमाल किया। शायद यहां इसका अर्थ *आत्मिक* बीमारी और मृत्यु है। यीशु का जो भी अर्थ हो, यह उनके लिए जिन्होंने मन नहीं फिराया, आनन्द का समय नहीं था। [32]KJV में ''reins'' है। यूनानी शब्द का अनुवाद ''मन'' (या ''लगाम'') मूल रूप में ''गुर्दे'' है। आज हम मोह के केन्द्र के रूप में ''हृदय'' की बात करते हैं, जबकि लहू का संचार करने वाला शारीरिक हृदय उस मोह का देने वाला नहीं है। कई साल पहले लोग इच्छा के केन्द्र क रूप में ''गुर्दा'' बताते थे, चाहे जिसे गुर्दा कहा जाता है, उसके लिए यह मूल शब्द नहीं था। [33]देखें मत्ती 16:27; रोमियों 2:6; 2 कुरिन्थियों 5:10; 11:15; प्रकाशितवाक्य 20:11, 12. [34]जैसा पहले कहा गया है, सात मूल तत्वों से अक्षर तो बन जाते हैं, परन्तु समय-समय पर उनमें भिन्नताएं रही हैं। यह एक भिन्नता है: यीशु उस मण्डली में ''कुछ विश्वासियों'' को स बोधित करने के लिए रुक गया। [35]मैं यह प्रभाव नहीं छोड़ना चाहता कि कलीसिया के सुधार के लिए अनुशासन की पहल केवल ऐल्डरों द्वारा ही की जा सकती है। मैं दो बातों पर बल देने का प्रयास कर रहा हूं: (1) मण्डली के लिए परमेश्वर द्वारा ठहराए गए अगुओं के रूप में, ऐल्डरों को आवश्यकता पड़ने पर अनुशासन में पहल करनी चाहिए। (2) किसी से दूर रहने के कारण कलीसिया के अगुओं का विरोध होने पर, प्रभावशाली अनुशासन में पहल करनी बहुत ही कठिन है। [36]हर टीकाकार के विचार में थोड़ा बहुत अन्तर है कि यह ''बोझ'' क्या था, परन्तु अधिकतर का यह मानना है कि किसी तरह यह यीशु की इच्छा की ही बात है। कई लेखक दो पदों में ''बोझ'' शब्द के इस्तेमाल की ओर ध्यान दिलाते हैं: मत्ती 11:28-30 में, ''बोझ'' मसीह की आज्ञा मानने को कहा गया है। प्रेरितों 15:28, 29 में बोझ अन्यजाति मसीहियों की कुछ मूल आज्ञाओं को मानने की ज़ि मेदारी है। कुछ लोग यह निष्कर्ष निकालते हैं कि प्रकाशितवाक्य 2:24 में ''बोझ'' उन पापों से दूर रहने की आवश्यकता है, जिन्हें करने के लिए इजेबेल मसीही लोगों को प्रोत्साहित कर रही थी। [37]कई बार जब किसी की मसीही गवाही से समझौता हो रहा हो तो किसी मण्डली को छोड़ना आवश्यक हो जाता है, परन्तु ऐसा कोई संकेत नहीं है कि थुआतीरा या उस मण्डली में जहां मेरा मित्र जाता था, ऐसा कुछ हुआ हो। [38]आयत 22 के ''उसके कामों'' और आयत 26 वाले ''मेरे कामों'' में अन्तर देखा जाता है। थुआतीरा के मसीही लोग इजेबेल वाले काम और यीशु के काम एक साथ नहीं कर सकते थे। [39]पूरे भजन के संदर्भ में भजन संहिता 2:9 पर विचार करें। [40]देखें रोमियों 5:17.

[41]सबसे प्रसिद्ध ''भोर का तारा'' शुक्र ग्रह है, परन्तु कई बार यह मंगल ग्रह होता है। [42]चार्ल्स आर. स्विंडॉल, *लैटर टू चर्चिस ... दैन एण्ड नाओ* (फुलरटन, कैलिफोर्निया: इनसाइट फ़ॉर लिविंग, 1986), 29. मेरी दो प्रासंगिकताएं स्विंडॉल से मिलती हैं और दो अलग हैं। [43]वही, 29. [44]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में किया जाए, तो समझा दें कि परमेश्वर के साथ स बन्ध सुधारने के लिए बाहरी पापी को क्या करना आवश्यक है और परमेश्वर के गुमराह बालक को क्या करना आवश्यक है (प्रेरितों 2:38; 8:22)। [45]रेअ समर्स, *वरदी इज़ द लै ब* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1951), 119.

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. क्या थुआतीरा के बारे में नये नियम में कहीं और पढ़ने को मिलता है?
2. आपको क्यों लगता है कि थुआतीरा की कलीसिया के नाम पत्र सातों पत्रों में सबसे ल बा है?
3. थुआतीरा में संघों द्वारा मसीही लोगों के लिए उत्पन्न दुविधा पर चर्चा करें। आपको क्या लगता है कि ऐसी परिस्थिति में लोगों का जवाब क्या होना चाहिए?
4. इस पत्र में यीशु के विवरण पर चर्चा करें। आपको क्यों लगता है कि थुआतीरा की

कलीसिया को शक्ति के चित्रण की आवश्यकता थी ?

5. इस मण्डली की अच्छी बातें कौन सी थीं ?
6. पुराने नियम वाली इजेबेल के बारे में आप जो भी जानते हैं, बताएं। आपको क्या लगता है कि थुआतीरा वाली इजेबेल उसके जैसी कैसे थी ? वह उससे अलग कैसे थी ?
7. नये नियम की शिक्षा के अनुसार यद्यपि स्त्रियां ऐल्डर नहीं बन सकती और न ही सार्वजनिक स ा में अगुआई कर सकती हैं, तो क्या इसका अर्थ यह है कि उनका कोई प्रभाव नहीं है ? इजेबेल का *बुराई* के लिए ज़बर्दस्त प्रभाव था। कुछ मसीही स्त्रियों के बारे में बताएं, जिन्होंने *भलाई* के लिए ज़बर्दस्त प्रभाव डाला है।
8. कलीसिया द्वारा इजेबेल और उसके अनुयायियों को अनुशासित न करने के स भावित कारण क्या हैं ?
9. इस तथ्य पर चर्चा करें कि परमेश्वर ने इजेबेल को मन फिराने का समय दिया। क्या आप अन्य अवसरों पर विचार कर सकते हैं, जब परमेश्वर ने दुष्ट लोगों को मन फिराने का समय दिया ?
10. आपको क्या लगता है कि यीशु की इस चेतावनी का कि वह पश्चात्ताप न करने वालों को क्लेश के बिस्तर और बड़ी पीड़ा में फैंक देगा, क्या अर्थ था ?
11. क्या कोई मण्डली परमेश्वर की इच्छा के अनुसार न होने के बावजूद विश्वासी बनी रह सकती है ? क्या हमें किसी मण्डली को केवल इसलिए छोड़ देना चाहिए क्योंकि हम ऐल्डरों के किसी निर्णय से सहमत नहीं हैं ?
12. किस अर्थ में हम मसीह के साथ अब राज कर रहे हैं ?
13. क्या आपने आकाश में कभी भोर का तारा देखा है ? प्रकाशितवाक्य में ''भोर का तारा'' क्या (या कौन) है ?